بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-94170-20616, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **19.02.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

पेशगोई मुस्लेह मौऊद, यह केवल भविष्यवाणी नहीं अपितु एक महान आसमानी निशान है जिसको ख़ुदाए करीम जल्ला शान्हु ने हमारे नबी-ए-करीम रऊफ़ुर्रहीम मुहम्मद-ए-मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता एंव महानता प्रकट करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

20 फ़रवरी का दिन अहमदिय्या जमाअत में पेशगोई मुस्लेह मौऊद के संदर्भ में विख्यात है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने एक बेटे के जन्म की पूर्व सूचना दी गई थी जो दीन का सेवक होगा, आयुषमान होगा तथा अन्य असंख्य योग्यताओं का धारक होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस भविष्यवाणी की महत्ता के विषय में फ़रमाते हैं कि यह केवल भविष्यवाणी नहीं अपितु एक महान आसमानी निशान है जिसको ख़ुदाए करीम जल्लाशान्हु ने हमारे नबी-ए-करीम रऊफ़ुर्रहीम मुहम्मद-ए-मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता एंव महानता प्रकट करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया और वास्तव में यह निशान एक मृतक को जीवित करने की तुलना में सह्त्रों कोटि उत्तम, प्रमुख, सम्पूर्ण, परिपूर्ण तथा श्रेष्ठतम है क्यूँकि मुर्दे को ज़िन्दा करने का यथार्थ यही है कि इलाही दरबार में निवेदन करके एक आत्मा को वापस मंगवाया जाए। परन्तु इस स्थान पर अल्लाह की कृपा एंव उसके उपकार तथा हज़रत ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत के द्वारा ख़ुदा-ए-करीम ने इस विनीत की दुआ को क़बूल करके ऐसी बरकतों वाली आत्मा भेजने का वादा फ़रमाया जिसकी प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष बरकतें पूरी धरती पर फैलेंगी। इस प्रकार यद्यापि यह निशान मृत्यु के बाद जीवन के समकक्ष प्रतीत होता है परन्तु विचार करने से ज्ञात होगा कि यह निशान मुर्दों को जीवित करने से सैंकड़ों कोटि उत्तम है।

फिर अपनों तथा अन्य लोगों ने देखा कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो पेशगोई थी, वह बड़ी शान से पूरी हुई। इस पेशगोई का यथार्थ जैसा कि समय ने प्रमाणित किया हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. थे। जमाअत के आलिम तथा सामान्य लोग तो विश्वस्त थे परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने स्वयं कभी इस बात की अभिव्यक्ति अथवा घोषणा नहीं की थी कि यह पेशगोई मेरे विषय में है। यहाँ तक कि आपकी ख़िलाफ़त पर तीस वर्ष बीत गए और अन्ततः 1944 में आपने इस बात का ऐलान फ़रमाया कि मैं मुस्लेह मौऊद हूँ।

हुज़ूर ने फ़रमाया- आज मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद के इस विषय पर दो ख़ुत्बों के द्वारा संक्षेप में आप ही के शब्दों में कुछ बयान करुंगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने 28 जनवरी 1944 ई. के ख़ुत्बः में फ़रमाया कि आज मैं एक ऐसी बात कहना चाहता हूँ जिसका बयान करना मेरी प्रकृति के अनुसार मुझ पर भारी लगता है परन्तु कुछ बातें तथा इलाही तक़दीरें इस बात को बयान करने से सम्बंधित हैं इस लिए मैं इसे बयान करने से, अपनी प्रकृति के संकोच के बावजूद रुक भी नहीं सकता। फिर आपने अपने एक लम्बे सपने का वर्णन फ़रमाया है और इसका स्वप्नफल बयान करते हुए आपने फ़रमाया कि वह पेशगोई जो मुस्लेह मौऊद के विषय में थी, ख़ुदा तआला ने मेरे अस्तित्व के भाग्य में की हुई थी। आप फ़रमाते हैं कि लोगों ने कहा और बार बार कहा कि आपका इन भविष्यवाणियों के विषय में क्या विचार है? परन्तु मेरी यह दशा थी कि मैंने कभी गम्भीरता पूर्वक इन पेशगोईयों को पढ़ने की चेष्टा भी नहीं की थी, इस विचार के कारण कि मेरी प्रवृत्ति मुझे कोई धोखा न दे तथा मैं अपने सम्बंध में कोई ऐसी धारणा न कर लूँ जो वास्तविकता के विरुद्ध हो।

हुज़ूर ने फ़रमाया- अतः देखें, जो वास्तव में है, वह तो इतनी सावधानी करता है और अन्य लोग, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट है निशान के बिना ही इसकी अभिव्यक्ति करते रहते हैं, उनको पागल कहने के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। इस प्रकार

इस भविष्य वाणी के सम्बंध में अपने संकोच एंव लज्जा का, एक स्थान पर आपने इस प्रकार वर्णन फ़रमाया है कि हज़रत ख़लीफ़ः प्रथम ने एक बार मुझे एक पत्र दिया तथा निर्देशित किया कि यह पत्र जो तुम्हारे जन्म के विषय में है, हज़रत मसी मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे लिखा, कि इसे ''तशख़ीसुल अज़हान'' में छाप दो। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल के आदर के कारण उसे प्रकाशित भी कर दिया परन्तु मैंने उस समय भी उसे ध्यान पूर्वक नहीं पढ़ा। लोगों ने उस समय भी कई प्रकार की बातें कीं, पत्र प्रकाशित होने पर, परन्तु मैं चुप रहा। मैं यही कहता था कि आवश्यक नहीं कि जिस व्यक्ति के बारे में ये पेशगोईयाँ हैं वही बताए भी, कि मैं इन भविष्यवाणियों का यथार्थ हूँ। इस प्रकार लोगों ने विभिन्न पेशगोईयाँ, आप फ़रमाते हैं कि लोगों ने मेरे बारे में मेरे सामने रक्खीं तथा दबाव डाला कि मैं स्वयं को इनका यथार्थ प्रमाणित करूँ। परन्तु मैंने सदैव यही कहा कि पेशगोई अपने यथार्थ को स्वयं प्रकट करती है। यदि ये पेशगोइयाँ मेरे सम्बंध में हैं तो ज़माना स्वयं देख लेगा कि मैं इनका यथार्थ हूँ और यदि मेरे सम्बंध में नहीं तो ज़माने की गवाही मेरे विरुद्ध होगी। दोनों अवस्थाओं में मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, मुझे आतुरता की आवश्यकता नहीं है। ख़ुदा तआला स्वयं वास्तविकता प्रकट कर देगा। जैसे इलहाम में कहा गया था कि उन्होंने कहा, आने वाला यही है अथवा हम दूसरे की प्रतीक्षा करें, ये इलहाम के वाक्य थे। दुनया ने यह प्रश्न इतनी बार किया कि इस पर एक लम्बा समय बीत गया। इस लम्बे समय के बारे में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम में सूचना विद्यमान है। उदाहरणतः हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के विषय में हज़रत यूसुफ़ अलै. के भाईयों ने कहा कि तू इसी प्रकार यूसुफ़ की बातें करता रहेगा (हज़रत याक़ूब को कहा था) यहाँ तक कि मृत्यु के निकट पहुंच जाएगा अथवा हताहत हो जाएगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यही इलहाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी हुआ। इसी प्रकार यह इलहाम होना कि युसुफ़ की सुगन्ध मुझे आ रही है, आपको इलहाम भी हुआ, आपने उसका एक शेअर में भी वर्णन किया हुआ है, यह बताता था कि ख़ुदा तआला के नियम के अनुसार यह बात एक लम्बे समय के पश्चात प्रकट होगी क्यूँकि हज़रत युसुफ़ भी अपने बाप को बड़े लम्बे समय के बाद मिले थे अथवा वह पेशगोई पूरी हुई थी। आपने फ़रमाया कि मैं तो इस विश्वास पर दृढ़ हूँ कि यदि मौत तक भी मुझ पर यह प्रकट न किया जाता कि ये पेशगोइयाँ मेरे सम्बंध में हैं, तब भी घटनाचक्र स्वयं बता देते कि ये भविष्यवाणियाँ मेरे हाथ से तथा मेरे ज़माने में पूरी हुई हैं इस लिए मैं ही इनका यथार्थ हूँ। परन्तु अल्लाह तआला ने अपने विधान के अंतर्गत इस बात को प्रकट कर दिया तथा मुझे संज्ञान भी दे दिया कि मुस्लेह मौऊद से सम्बंधित पेशगोईयाँ मेरे विषय में ही हैं।

आपने कुछ पेशगोइयों का संक्षिप्त वर्णन किया है। उदाहरणतः ''वह तीन को चार करने वाला होगा'' इसी प्रकार ''दो शम्बः है मुबारक दो शम्बः'' इन दोनों बातों की आपने इस प्रकार व्याख्या फ़रमाई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विचार तीन को चार करने वाली पेशगोई के विषय में इस ओर गया है कि वह तीन बेटों को चार करने वाला होगा। परन्तु फ़रमाते हैं कि मेरी सोच अल्लाह तआला ने इस ओर भी फेरी है कि इलहामी तौर पर यह नहीं कहा गया कि वह तीन बेटों को चार करने वाला होगा। बल्कि इलहाम में केवल यह बताया गया था कि वह तीन को चार करने वाला होगा। अतः मेरे विचार में यह उसकी जन्म तिथि बताई गई है। यह भविष्यवाणी 1886 ई. के प्रारम्भ में हुई थी, मुस्लेह मौऊद की। और आपने फ़रमाया कि मेरा जन्म 1889 में हुआ। इस प्रकार तीन को चार करने वाली पेशगोई में यह सूचना दी गई थी कि उसका जन्म चौथे वर्ष में होगा और ऐसा ही हुआ, और यह जो आता है दो शम्बः मुबारक दो शम्बः इसके अन्य अर्थ भी हो सकते हैं परन्तु मेरे विचार में इसका एक स्पष्ट अर्थ यह है कि दो शम्बः सप्ताह का तीसरा दिन होता है, दूसरी ओर आध्यात्मिक सिलसिलों में नबियों तथा उनके ख़लीफ़ाओं का अलग अलग दौर होता है। इसके अनुसार विचार करके देखो, पहला दौर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का था, दूसरा दौर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. का था और आप फ़रमाते हैं कि तीसरा दौर मेरा है। उधर अल्लाह तआला का एक अन्य इलहाम भी इस व्याख्या को प्रमाणित कर रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इलहाम हुआ था और वह इलहाम यह है कि ''फ़ज़्ले उमर'', हज़रत उमर रज़ी.भी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीसरे नम्बर पर ख़लीफ़ः थे। इस प्रकार दो शम्बः है मुबारक दो शम्बः (सोमवार) से अभिप्रायः यह है कि इस मौऊद के ज़माने का उदारहण अहमदियत के दौर में ऐसा होगा जैसा दो शम्बः होता है अर्थात इस सिलसिले में अल्लाह तआला की ओर से दीन की सेवा हेतु जो व्यक्ति खड़े किए जाएँगे, उनमें वह तीसरे नम्बर पर होगा। फ़ज़्ले उमर के इलहामी नाम में भी इस ओर संकेत है। अर्थात अल्लाह के कलाम में يفسره بعضه بعضا के अनुसार फ़ज़्ले उमर के शब्दों में दो शम्बः है मुबारक दो शम्बः की व्याख्या फ़रमा दी, परन्तु फ़रमाया कि इस्लाम में एक अन्य सूचना भी है और ख़ुदा तआला, मुबारक दो शम्बः एक ऐसे माध्यम से भी लाने वाला है जो, फ़रमाते हैं कि मेरे सामर्थ्य में नहीं था तथा कोई मनुष्य नहीं कह सकता कि मैंने अपने निश्चय से तथा जान बूझकर इसको जारी किया है अर्थात तहरीक-ए-जदीद का जारी करना, जिसे 1934 ई. में ऐसी परिस्थितियों में जारी किया गया जो सरकार के एक कार्य ने, जिसने जमाअत के विरुद्ध कुछ कठोर कार्य-वाही करने की योजना थी तथा एहरार के आतंक के कारण अल्लाह तआला ने इस तहरीक

का, आप फ़रमाते हैं कि मेरे हृदय में डाला था और इस तहरीक के पहले दौर के लिए मैंने दस वर्ष निश्चित किए। प्रत्येक इंसान जब क़ुर्बानी करता है तो क़ुर्बानी के बाद उस पर एक ईद का दिन आता है, अतः देख लो, रमज़ान के रोज़ों के बाद ईद का दिन होता है। इसी प्रकार आप फ़रमाते हैं कि अनोखी बात है कि 1945 का साल, यदि इस परिवेश में देखा जाए, तहरीक-ए-जदीद के संदर्भ में जो पहले दस वर्ष की तहरीक थी तथा ग्यारह्वाँ साल है, वह ईद का साल है तथा यह साल पीर के दिन से आरम्भ हो रहा है और पीर का दिन दो शम्बः कहलाता है। अतः अल्लाह तआला ने इन शब्दों में यह सूचना भी दी थी कि एक ज़माने में इस्लाम अत्यंत दुर्बल स्थिति में, इसके प्रसार के लिए एक महत्त्व पूर्ण तबलीग़ी विभाग की आधार शिला रक्खी जाएगी और जब इसका पहला दौर सफलता पूर्वक पूरा होगा तो यह जमाअत के लिए मुबारक समय होगा।

हुज़ूर ने फ़रमाया- फिर इस लम्बे सपने, जिसके पश्चात हज़रत मुस्लेह मौऊद ने, मुस्लेह मौऊद होने का ऐलान किया था, इसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि सपने में मेरी ज़बान पर यह वाक्य जारी हुआ था कि ان المسیح الموعود مثیلہ و خلیفتہ सपने में भी मुझे आभास हुआ कि ये अद्भुत शब्द मेरी ज़बान पर जारी हुए हैं। फ़रमाते हैं कि बाद में कुछ लोगों ने जब यह सपना सुना तो इसके बाद कहा कि मसीही नफ़्स होने का वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 ई. में है। इश्तिहार में ये शब्द हैं कि वह दुनया में आएगा तथा अपने मसीही नफ़्स से और रूहुल हक़ की बरकतों से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। रूहुल हक़, तौहीद की रूह को कहते हैं और आपने इस्लाम की तबलीग़ की दुनया में आधार शिला डाल कर दुनया के दिलों को शिर्क से पाक किया। फ़रमाया कि तीसरे मैंने सपने में देखा था कि मैं भाग रहा हूँ यही नहीं कि मैं तेज़ी से चलता हूँ बल्कि दौड़ता हूँ और ज़मीन मेरे क़दमों तले समटती चली जाती है।

मौऊद बेटे की पेशगोई में यह बात है कि जल्द जल्द बढ़ेगा। इसके अनुसार सपने में देखा कि मैं कुछ अन्य देशों की ओर गया हूँ और फिर मैंने वहाँ अपने कार्य को समाप्त नहीं किया वहाँ जाकर, अपने काम को समाप्त नहीं कर दिया बल्कि मैं और आगे जाने की योजना कर रहा हूँ। मैंने सपने में कहा कि ऐ अब्दुश्शकूर! अब मैं आगे जाऊँगा और जब सफ़र से वापस आऊँगा तो देखूँगा कि तू ने तौहीद को स्थापित कर दिया है, शिर्क को मिटा दिया है और इस्लाम तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा को दिलों में बिठा दिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर जो अल्लाह तआला ने कलाम अवतरित किया उसमें इसी की ओर संकेत पाया जाता है कि वह ज़मीन के किनारों तक शोहरत पाएगा अर्थात तबलीग़ के कामों को आगे बढ़ाने वाला होगा और हम देखते हैं कि यह पेशगोई भी निश्चित रूप से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के युग में बड़ी शान के साथ पूरी हुई है। इसी प्रकार आपके इस लम्बे सपने में लगभग, पेशगोई मुस्लेह मौऊद से मिलती जुलती अनेक बातें हैं जो विभिन्न रूपों में आपको दिखाई गईं।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने, यह जो पेशगोई थी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की, इसके संदर्भ में कुछ घटनाएँ जो हैं वे किस प्रकार इसके अुनसार हैं, आपने ज़माने से तथा अब जो घटनाएँ हुई इस पेशगोई को पूरा करने वाली, वे किस प्रकार हैं, उनका संक्षेप में वर्णन करुंगा। आप रज़ी. ने एक वृत्तांत बयान किया कि एक बार मैं हज़रत अम्मा जान के कमरे में नामाज़ की प्रतीक्षा में ठहल रहा था तो मुझे मस्जिद से ऊँची ऊँची आवाज़ें आईं जो यह कह रहे थे कि एक बच्चे को आगे करके जमाअत को नष्ट किया जा रहा है। तो आप फ़रमाते हैं कि विरोधियों का यह कथन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम की सत्यता प्रमाणित कर रहा था कि वह जल्द जल्द बढ़ेगा। आप फ़रमाते हैं- ख़ुदा ने मुझे इतनी जल्दी बढ़ाया कि दुश्मन चकित रह गया, क्यूँकि कुछ महीने पहले मुझे बच्चा कहने वाले, कुछ महीनों के पश्चात ही मुझे एक चतुर अनुभवी कह कर मेरी बुराई कर रहे थे, बिल्कुल उलट गए वे। अर्थात बचपन में ही अल्लाह तआला ने मेरे हाथों से सिलसिले में हस्तक्षेप करने वालों को पराजित करा दिया। फ़रमाते हैं कि वह दिन गया और आज का दिन आया, देखने वाले देख रहे हैं कि जमाअत की जो संख्या उस समय थी, जब वह मेरे हवाले की गई, आज ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से, उससे सैंकड़ों गुना अधिक है। जिन देशों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम पहुंच चुका था, आज उससे बीसियों गुना अधिक देशों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम पहुंच चुका है। अतः वह ख़ुदा जिसने कहा था कि वह जल्द जल्द बढ़ेगा तथा ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा, वह भविष्यवाणी ऐसे महान रंग में पूरी हुई है कि दुश्मन से दुश्मन भी इसका इंकार नहीं कर सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पेशगोई को तो इतना महत्त्व पूर्ण घोषित किया है, जैसा कि मैंने आरम्भ में भी उद्धरण पेश किया था कि यह केवल पेशगोई ही नहीं बल्कि महान निशान है। इस पेशगोई के अनुसार लड़के का जन्म नौ वर्ष में होना था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नौ वर्ष की सीमा तक तो स्वयं अपने जीवित रहने का ही हाल मालूम नहीं और न ही यह पता है कि उक्त समय तक किसी प्रकार की संतान अकारण हो जाएगी अपितु लड़का पैदा होने की किसी अटकल से अथवा न पैदा होने की किसी संभावना पर विश्वास किया जाए। फिर केवल लड़का ही नहीं पैदा होना था बल्कि

इस्लाम की शान एंव प्रतिष्ठा का कारण होगा वह लड़का, यह भी भविष्यवाणी में था। वह क्या ज़माना था जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर दुश्मन चारों ओर से आघात कर रहे थे केवल इस कारण कि आपने इलहाम का दावा किया था। आपने फ़रमाया था कि मुझे इलहाम होता है। किसी नवीन सुधारक का दावा नहीं था, नियुक्ति का दावा भी नहीं था। उस समय एक लड़के की पेशगोई उन उच्चतम विशेषताओं के साथ आपने बयान फ़रमाई। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जब किसी नायब की ख्याति के विषय में कहा जाए तो इसका अर्थ होता है कि उसके आक़ा व मुताअ (स्वामी एंव आज्ञा पालन योग्य) की ख्याति होगी। अतः जब अल्लाह तआला ने पेशगोई में यह कहा कि वह धरती के छोर तक विख्यात होगा तो इसका अर्थ यह था कि उसके द्वारा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी दुनया के किनारों तक, उनका नाम भी दुनया कि किनारों तक पहुंचेगा। अब देख लो, पेशगोई कितनी स्पष्ट है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में केवल अफ़ग़ानिस्तान ऐसा देश था जहाँ किसी प्रभाव के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचा था अन्य देशों में केवल उड़ते हुए समाचार थे और जब हज़रत मुस्लेह मौऊद को अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ः बनाया तो ख़ुदा तआला की कृपा से, आप फ़रमाते हैं कि समाट्रा, जावा, स्ट्रीट सैटेल्मैंट, चीन, मारीशस, अफ्रीक़ा के अन्य देश, मिस्र, फ़िलिस्तीन, ईरान, अन्य अरब देश तथा योरुप के कई देशों में अहमदियत फैली।

फिर इस पेशगोई में अल्लाह तआला की ओर से यह सूचना भी दी गई थी कि वह उलूमे ज़ाहिरी व बातनी से पुर (प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष ज्ञान के भंडारों से परिपूर्ण) किया जाएगा। आप फ़रमाते हैं कि इस प्रकार अल्लाह तआला ने चाहा कि आपकी पेशगोई के अनुसार उस ज़माने में एक ऐसे व्यक्ति को अपने कलाम से सुशोभित फ़रमाए जो रूहुल हक़ की बरकत अपने साथ रखता हो, जो प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण हो, जो दुश्मन के उन सांसकृतिक हमलों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की व्याख्या तथा रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा बयान की हुई व्याख्या तथा क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा के अनुसार दूर करे और इस्लाम की सुरक्षा का कार्य करे। इस प्रकार ख़ुदा तआला ने अपना काम कर दिया तथा मेरे लेखों पर अपने प्रमाण की मुहर लगा दी। आपने फ़रमाया कि जब तक ख़ुदा तआला ने मुझे नहीं कहा, मैं चुप रहा। और जब ख़ुदा तआला ने बता दिया और न केवल बता दिया अपितु निर्देश दिया कि बता दूँ बल्कि अपने फ़ज़्ल से ऐसी अवस्थाएँ पैदा फ़रमाईं जो इस पेशगोई की सत्यता के लिए एक प्रमाण हैं। जिस प्रकार आकाश में चाँद चमकता है तो अल्लाह तआला उसके आस पास सितारे पैदा कर देता है इसी प्रकार इन दिनों में बहुत से लोगों को ऐसे सपने आए जिनमें इस सपने का विवरण दोहराया गया। फिर आप में कुछ निष्ठावान लोगों के तथा अपने कुछ अन्य सपनों एंव इलहामों का अपने समर्थन में वर्णन फ़रमाया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अनेक बार मुझ पर अपने अप्रत्यक्ष को प्रकट करके इस पेशगोई को सच्चा कर दिया है कि मुस्लेह मौऊद ख़ुदा तआला सत्यात्मा से सुशोभित होगा। ये अल्लाह तआला के निशान हैं जो उसने मुझ पर प्रकट फ़रमाए। लोग कहते हैं कि इस में क्या युक्ति थी कि दोस्त तो पहले ही मुझे पहले ही इन पेशगोइयों का यथार्थ कहते रहे तथा मैंने इन पेशगोइयों का यथार्थ होने का दावा अब किया है, क्या हिकमत है इसमें। मैं कहता हूँ इसमें युक्ति वही है जो क़ुरआन-ए-करीम कहता है ماكان الله ليضيع ايمانكم अर्थात जब अल्लाह तआला नबी की नियुक्ति के पश्चात मौऊद खड़ा करता है तो यह पसन्द नहीं करता कि उसके द्वारा स्थापित जमाअत भ्रष्टता का शिकार हो जाए तथा उनका ईमान नष्ट हो जाए। इस लिए अल्लाह तआला ने मुस्लेह मौऊद के सम्बंध में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत अर्थात सहाबा के युग में आना था, यह यक्ति पूर्ण प्रबन्ध किया कि पहले उसे जमाअत का ख़लीफ़ः बनाकर उनसे आज्ञापालन की प्रतिज्ञा ले ली तथा इन पेशगोइयों के पूरा होने के साधन जुटा दिए जो उसके विषय में बताई गईं थीं और जब जमाअत पर वास्तविकता विदित हो गई तो फिर उसे भी अर्थात ख़लीफ़तुल मसीह को भी अथवा मुस्लेह मौऊद होने वाले को भी इस यथार्थ से आसमानी सूचनाओं के द्वारा ज्ञान प्रदान कर दिया ताकि आसमान और ज़मीन दोनों की गवाही एकत्र हो जाए और मोमिनों की जमाअत विमुखता एंव इंकार के धब्बे से भी सुरक्षित कर दी जाए।

अल्लाह तआला इस ज़माने में भी सबके ईमान को सलामत रक्खे, प्रत्येक अहमदी के ईमान को सलामत रक्खे तथा कुफ्र व इंकार के दाग़ से सुरक्षित रक्खे। जमाअत के दोस्तों को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के ज्ञान एंव विवेक से परिपूर्ण कलाम से भी अधिकाधिक लाभान्वित होना चाहिए, उर्दू में भी है, शेष भाषाओं में भी कुछ लिट्रेचर है, उसको पढ़ना चाहिए, अल्लाह तआला इसकी सबको तौफ़ीक़ दे।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम सूफ़ी नज़ीर अहमद साहब सुपुत्र मुकर्रम मियाँ मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब मरहूम के सद्कर्मों तथा सेवाओं का वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के पश्चात उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ने का ऐलान फ़रमाया।